६ यशोधरा काव्य में गीतात्मकता

गीतिकाव्य का विकास :

गीतिकाव्य का मूल रूप वेदों के मन्त्रों में मिलता है । समस्त सामवेद में संगीतात्मकता दिखायी देती है । संस्कृत काव्य में गीतिकाव्य का विकास हुआ । हिन्दी साहित्य में गीतिकाव्य की परम्परा जयदेव के "गीत गोविन्द" से प्रेरणा लेकर चली । तुलदीसादने भी गीतिकाव्य की रचना की । सूरदास और अष्टछाप कवि तथा मीरा के पदों में गीतिकाव्य की रचना हुई है । रीतिकाल में शृंगार होने के कारण गीतिकाव्यधारा लुप्त हो गई । आधुनिक काव्य में छायावाद और रहस्यवाद के उदय के साथ ही गीतिकाव्य का जन्म हुआ ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावादी काल में ही "यशोधरा" की रचना की है । छायावाद में मुख्यत: गेयत्व की प्रधानता है । अत: उस कालवधि की रचना होने के कारण कविपर छायावादी संस्कार पडा है कि उन्होंने भी यशोधरा में गीतों की योजना की है । गीत विधा में हृदय की सुख दु:खात्मक अनुभूतियों के अभिव्यक्तिकरण में सहायक बनती है । इस विषय में महादेवी वर्मा का यह कथन अवलोकनीय है - " सुख दु:ख की भावावेशमयी अवस्था का विशेष गिने चुने शब्दों में स्वर साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है । गीत यदि दूसरे का इतिहास न कहकर वैयक्तिक सुख दु:ख ध्वनित कर सके तो उसकी मार्मिकता विस्मय की वस्तु बन जाती है, इसमें सन्देह नहीं ।"[१] इसका अभिप्राय यह है कि गीतो का सम्बन्ध सुख दु:खात्मक अनुभूतियोंके अभिव्यक्तिकरण से है, "यशोधरा" काव्य में यशोधरा कभी अपने पति और पुत्र से मिलनेवाले सुखों की ओर तो कभी पति वियोग के कारण अनुभव होनेवाली पीडा की अभिव्यंजना करती है ।

१] गुप्तजी और उनकी यशोधरा - प्रो. कृष्णमोहन अग्रवाल - पृ. १५६

गीतिकाव्य की विशेषताएँ :

अन्तर्मुखी सूक्ष्म भावनाओंको व्यक्त करने के लिये गीतिकाव्य को श्रेष्ठ स्थान है। विविध विद्वानोंने भावों के प्रथम प्रयत्न को ही गीत मानते है । निम्नलिखित पंक्तियों में गीत के बारे में जानकारी मिलती है -

" गीत केवल प्यार की आसक्ति है,
या कि आँसू की तरल अभिव्यक्ति है ।"

प्यार की आसक्ति जब आँसू की तरल अभिव्यक्ति बन जाती है तो गीत स्वत: ही फूट निकलते है ।

कतिपय विद्वानोंने गीति साहित्य की निम्नलिखित् विशेषतायें बतलायी है ।

१] वैयक्तिक भावनाओं की अभिव्यक्ति ।
२] गीत में आद्यन्त एक ही भाव सूत्र की विद्यमानता ।
३] संगीत तत्त्व का पुट ।
४] आकार की लघुता ।
५] शब्द चयन सौष्ठव और भाषा माधुर्य ।
६] भावनामयता और प्रभावात्मकता ।

" यशोधरा " काव्य में वे समस्त विशेषताएँ दिखायी देते है । यह कृति मुख्यतया यशोधरा के जीवन में आनेवाले विविध परिवर्तनोंकी कहानी है । इसमें विवाहपूर्व की सुखद स्मृति का अंकन मिलता है तो कहीं गृहस्थ जीवन की हास परिहास झाँकिया है । और इसमें मातृत्व भाव भी मिलता है। पति वियोग के कारण बन गयी आकुल हृदय की भावना ही गीत बन गयी है । गीतिकाव्य में जो मुख्य विशेषताएँ बनाई गई है, उनकी कसौटी पर "यशोधरा" सफल गीतिकाव्य कृति सिध्द होती है ।

यशोधरा के गीत :

"यशोधरा" काव्य में नये ढंग के गीतों की अभिव्यक्ति हुई है । "यशोधरा" काव्य के गीत और प्राचीन गीतों में किसी भी प्रकार का साम्य नहीं है । प्राचीन गीतों में सामूहिक भावना का वर्णन है और व्यक्ति - विशेष की विशिष्ट भावनाओं का वर्णन अल्पमात्रामें पाया जाता है । और नवीन पध्दती के गीतों को "गीति" [या लिरिक Lyric] कहा जाता है । "गीति" में भाव एवं लय मुख्य अंग है । नवीन प्रयोग से जहाँ यशोधरा काव्य आकर्षक बन पडी हैं वहाँ शिथिल कथा-विधान आंशिक कथोपकथन और निर्णय-निष्कर्ष के कारण विशेष प्रभाव वृध्दि करने में असमर्थ है । "यशोधरा" काव्य गुप्तजी की भावुकता का प्रमाण है । भावों की उध्दिग्नता उनके पात्रों में भी परिलक्षित होती है । ऐसी गीतिकाएँ यशोधरा में सफल भी हुई है । इनमें गुप्तजीने आशा आकाक्षांओ का वर्णन किया है । यशोधरा में गीतों के अतिरिक्त कविता, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया है । बीच में गदय - पदय और नाटक को स्थान दिया है । अत: "यशोधरा" मिश्रित गीतिकाव्य है ।

गीतात्मकता : गीतों में तीव्रता संवेग और नवीनता होनी चाहिए । कथासूत्रों गीतों के साथ चलनेपर वे शिथिल हो जाते है । "यशोधरा" काव्य में भाव का उध्देग मिलता है उदा -

" स्दन का हँसना ही तो गान ।
गा - गा कर रोती है मेरी हृततन्त्री की तान ।
मीड - मसक है कसक हमारी, और गमक है हुक ।
चातक की हुत - हृदय - हूति जो, सो कोयल की कुम ।"

इस पक्तियों में यशोधरा के हृदय की वेदना उध्देग मिलता है ।

"यशोधरा" काव्य में कथासूत्र गूँथा गया है । गुप्तजी प्राय: पात्र की मानसिक स्थितिपर गीतियाँ कहता चलना है इससे ही कथासूत्र आगे बढता है । यह स्थिति यशोधरा काव्य में अधिक दिखायी देती है । लेकीन इन गीतों में कवि को सफलता कम मिली है । गुप्तजीने कथासूत्र के लिए वर्णनात्मक छन्द का प्रयोग करते तो फिर बीच में रुककर भावना विशेष के लिए गीतों का प्रयोग करता तो कहीं अधिक सौंदर्य आ गया होता । गौतम संन्यास ग्रहण करने के पूर्व स्थिति तथा यशोधरा के स्दन को गीतों में वर्णित किया जा सकता तथा शुध्दोधन आदि के बीच के कथानक को वर्णनात्मक छन्दों में ही लिखना उपयुक्त होता । बुध्द के अन्तोर्व्दन्द को वर्णन गीतों में है । किंतु तुकबन्दी के कारण नीरसता उत्पन्न हो गयी है । निम्नलिखित गीतों की भाषा संगीतमय नही है । बहुत शब्द खटकते है इसमें "चक्र" "नक्र""भीता" "तीना"

" घूम रहा है कैसा चक्र ।
वह नवनीत कहाँ जाता है, रह जाता है तक्र ।
पिसो, पडे हो इसमें जब तक
क्या अन्तर आया है अब तक१
सहें अन्त तोगत्वा कब तक -
है इसकी गति वक्र१ "

" खोजूँगा मै उसको, जिसके,
बिना यहाँ सब तीता है ।
भुवन भावने आ पहुँचा मैं,
अब क्यों तू यों भीता है१"

कथासूत्र को जोडने में गीत असफल :

"यशोधरा" काव्य कथासूत्र जोडने में असफल रहा है । जो अन्तर्व्दन्द "यशोधरा" काव्य लिखने के उद्देश्य की पुर्ति में बाधक बनता है, वही अन्तर्व्दन्द "यशोधरा " के काव्य रूप की सफलता में भी बाधक बनता है । गीतों में अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का होना आवश्यक है लेकीन गुप्तजी बहिर्मुखी होने के कारण गीतिकाव्य में उनको सफलता नहीं मिल सकी । गुप्तजी इतिवृत्तात्मक प्रवृत्तियों को न छोड सकने के कारण यशोधरा काव्य छायावादी गीतिकारोंसे पीछे रह गया है ।

यशोधरा में सुन्दर और सफल गीत :

"यशोधरा" काव्य में ऐसे गीत है जिनकी अनुभूति और भावों की गहराई के हृदय को झकझोर देती है। यशोधरा काव्य में निम्नलिखित प्रसिध्द गीत है उदा. -

सखि वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी

इस पंक्तिं में पति के प्रति आसक्ति दिखायी देती है । किन्तु प्रत्येक पंक्ति में पति की उपेक्षा से उत्पन्न दीनता, शोक, ग्लानी, गर्व पश्चाताप, आवेग, वितर्क और स्मृति जैसी अनेक चित्तवृत्तियां भी पति विषयक रति को पुष्ठ करती है ।

इसमें एक ओर यशोधरा के चित्त में कितना स्वाभिमान उत्पन्न होता है, चित्त की यह दीप्ति भी देखने ही योग्य है । किंतु साथ दैन्य भी मिलता है ।

हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा,
रहें स्मरण ही आते ।।

भावों का द्वंद्व :

" यशोधरा " काव्य पढने के बाद चित्तमें प्रथम पश्चाताप, आत्मग्लानि, शोक फिर गर्व उत्पन्न होता है और तुरन्त ही फिर दीनता -

किस पर विफल गर्व अब जागा?

इस काव्य में तो भावों की परस्पर टकराहट देखने को मिलती है।

किंतु कवि जानते है कि परस्पर भावनाओं के और नाना भावनाओंसे प्रेम में वृध्दि होती है । फिर शंका भी उत्पन्न होती है । यह ठीक है कि मिलन होगा, किन्तु यह मिलन कैसा होगा, यह अनुमान चलता है, आँसुओंसे प्रियका अभिषेक होगा, यौवन समाप्त हो जायेगा किंतु अत: मिलन के, आनन्द में भी कसक रहेगी किंतु यह सब बातें प्रिय ने नही सोचा है । वे चुपचाप चले गए है । -

रोते प्राण उन्हें वारेंगे
पर क्या गाते - गाते?

संगीतात्मकता :

"यशोधरा काव्य में संगीतात्मकता और लय का सुन्दर प्रयोग हुआ है । उदा. -

प्रियतम तुम श्रुति पथ से आये ।
मेरे - हास - विलास । किन्तु क्या भाग्य तुम्हें रख पाए,
दृष्टि - मार्ग से निकल गये थे, तुम रसमय मन भाए ।

निम्नलिखित पंक्तियोंमे अपने रूप के प्रति गर्व और दुर्भाग्यपर पश्चाताप दिखायी देता है ।

जाओ मेरे । सिर के बाल,
उसे न हाय मुझे रुडी तक विस्तृत ये विकराल ।
करें न और मुझे अब आकर हेम हीर मणिमाल,
चार चूडियाँ ही हाथों में पडी रहें चिरकाल ।

इसीप्रकार " आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा अब है मेरी बारी " गीत भी सफल है ।

छायावादी अन्तर्मुखी भावना :

छायावादियों जैसी अन्तर्मुखी भावना दिखायी देती है उदा -

" मरण सुन्दर बन आया री "

छायावादी कवि की यह विशेषता है कि विरह की अवस्थामें नाना वृत्तियों को जगाकर उसका विस्तार करना और अपनी भावना से सारा जगत तथा गत की प्रत्येक वस्तु अपनी भावना में डूबी दिखाई पडती है । जगत भावाविभूत बन जाता है, यह स्थिती बहुत ही मार्मिक बन जाती है क्योकी कोई भी कला से चित्र का विस्तार होता है वह कला श्रेष्ठ होती है । यशोधरा को जिस मृत्यु का आगमन दिखाई देता है वह सारे जगत में छाया हुआ है -

फूलोंपर पद रख फूलों पर रच लहरों से रस,
मन्द पवन के स्पन्दन पर चढ बढ आया सविलास ।
भाग्य ने अवसर पाया री ।
मरण सुन्दर बन आया री ।

गीतिकाव्य परम्परा मेंगुप्तजी का स्थान महत्वपूर्ण है । कवि की गीती रचना विषय प्रधान है । किंतु विषयी प्रधान नहीं है । गुप्तजी के गीत, विशुध्द गीत नहीं है । उन्हें प्रबन्धत्व की परंपरा में परखा जा सकता है ।

मैथ्यू अर्नाल्ड के कथनानुसार " कवि- प्रतिभा का प्रमुख गुण काव्य के अनुरूप काव्य के विषय का चयन करना है । श्रेष्ठ काव्य सृष्टि के लिये श्रेष्ठ विषय को चुनना कवि की गुण शक्ति का प्रतिक है । "[1] इस कथन के अनुसार "यशोधरा" काव्य सफल है । यशोधरा का चरित्र स्वयं ही काव्य है इसलिए कवि सफलता सहज मानी जा सकती है । सिध्दार्थ, राहुल, यशोधरा इस पात्रों का प्रचार जनमानसमें पूर्व से है इसलिए "यशोधरा" काव्य समझने और लोकप्रियता प्राप्त करने में कठीनाईयाँ उत्पन्न नहीं है । यशोधरा की प्रसिध्दी के भी मुख्य कारण यह है कि "यशोधरा" के चरित्र एवं विषयचयन को देखते हुए गुप्तजी सफल कवि है ।

" गुप्तजी के गीतों में कोमलकांत पदावली आत्मानुभूति एवं आन्तरिक वृत्तियों का चित्रण, संक्षिप्तता, सरसता, गेयता आदि तत्व प्राय: विधमान है । उनमें न भक्ति-कालीन कवियों के समान मार्मिकता है और न छायावादी कवियों के समान स्वानुभूति का प्रकटीकरण परन्तु उन्होंने वर्ण्य विषय को सहज सरल रूपमें निजी भावनाओं समतुल्य संक्षिप्त एवं प्रभावोत्पादक रूपमें व्यक्त करके एक महान गीतकार होने का प्रमाण दिया है ।"[2]

१] समीक्षा के नये प्रतिमान - शिवप्रसाद क्षेत्रिय दिवाकर - पृष्ठ-८६

२] कविवर मैथिलीशरण गुप्त और साकेत - शर्मा ब्रजमोहन - पृष्ठ ३५

---

6 यशोधरा काव्य में काव्य सौंदर्य

मैथिलीशरण गुप्त की "यशोधरा" कृति "साकेत" के बाद की महत्वपुर्ण और सफल कृति है । "साकेत" कृति के पूर्व कवि अनेक कृतियाँ प्रस्तुत कर चुके थे । गुप्तजी के अनेक कृतियों के तुलनात्मक अध्ययन करने से " यशोधरा " की कला की विशेषताएँ समझ में आती है ।

यशोधरा का चरित्र :

"यशोधरा" काव्य में यशोधरा प्रमुख पात्र है । "यशोधरा" का विषय गम्भीर और प्रभावशाली है । भगवान बुध्दके चरित्र के सभी अंग और "यशोधरा" के सौंदर्य का पूर्ण चित्रण करने के लिए अश्वघोषने "बुध्द-चरित" कविता लिखि । लेकीन अश्वघोष "यशोधरा" की गरीमा स्पष्ट नही कर सके। "बुध्द चरित" से कहीं अधिक संतोष गुप्तजी की "यशोधरा" काव्य पढकर होता है । यशोधरा का चरित्र महान होने के कारण काव्य के लिए एक आकर्षक विषय गुप्तजी को मिला था । यशोधरा का चरित्र वस्तुत: स्वयं ही अपने में एक काव्य है । इसमेंही गुप्तजी की सफलता दिखायी देती है । गुप्तजी विषयचयन की दृष्टि से सफल कवि रहे है । "यशोधरा" पात्र महान और प्रसिध्द है, और जनतामें पहले से ही एक श्रध्दा रही है ऐसे विषयपर पाठक सहजही आकर्षक बन जाते है ।

यशोधरा के विरह और वात्सलता का वर्णन ये दोनों रूप बडे ही सजगता और सहानुभूतिपूर्वक चित्रित किए गए है । "यशोधरा" काव्य में राहुल जननी और विरहिणी यशोधरा की भावनाओंका वर्णन मार्मिक बन गया है । "यशोधरा" काव्य में रति और पुत्र राहुल विषयक प्रेम का वर्णन किया गया है ।

पति विषयक रति वर्णन :

इस दृष्टिसे यशोधरा काव्य को सफलता मिलि है ।

" सखि वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपने पथ की बाधा पाते ।

इस पंक्ति में पति की उपेक्षा से उत्पन्न पश्चाताप, शोक, आवेग दीनता, वितर्क गर्व और स्मृति जैसी अनेक चित्तवृतियाँ भी पतिविषयक रति को पुष्ठ करती है -

मुझको बहुत उन्होंने माना
फिर भी क्या पूरा पहिचाना?
मैंने मुख्य उसी को जाना
जो वे मन में लाते

यशोधरा सिध्दार्थ की अनुगामिनी थी । सिध्दार्थ के मन में जो बात आती वह महत्त्वपूर्ण मानती है। लेकीन सिध्दार्थ चोरी चोरी चले जाने के कारण सारी नारी जाति के प्रति अविश्वास दिखाया है। यह पश्चाताप एक ओर तो गोपा में आत्मग्लानि उत्पन्न करता है दुसरो ओर इसी आत्मग्लानि को पति प्रेम का सहायक भी बनाता है । यह आत्मग्लानि बहुत बढने के कारण पति के प्रति घृणा उत्पन्न हो सकती थी तब गुप्तजी कहते है -

नयन उन्हें है निष्ठुर कहते
पर इनसे जो आँसू बहते
सदय हृदय वे कैसे सहते
गए तरस ही खाते ।

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR LIBRARY

पति तो सहृदयी है वे चुपचाप चले गये क्योंकि मेरी आँखों से बहते आँसुओं को वे कैसे देख सकते थे इसलिए वे चुपचाप चले गये यही "आत्मसाधना" पति के प्रति आसक्ति को दृढ कर देता है । "यशोधरा" काव्य में गर्व की व्यंजना भी हुई है। इसके साथ ही यशोधरा के चित्तमें स्वाभिमान उत्पन्न हुआ है -

हुआ न यह भी भाग्य अभागा
किस पर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा
रहें स्मरण ही आते ।।

भावों का द्वंद्व :

भावों की परस्पर विरोधी भावना दिखाती है । चित्त में प्रथम पश्चाताप, फिर आत्मग्लानि, शोक, फिर गर्व उत्पन्न होता है और तुरन्त ही फिर दीनता -

किस पर विफल गर्व अब जागा?

अब यह गर्व जागृत हुआ, प्रिय के वियोग में अब क्या मूल्य है? मेरा अभिमान तो मेरा प्रिय ही साजना, उसी के आदर से मेरा गर्व सुरक्षित था, तब उसीने उपेक्षा कि तो यह गर्व किस काम का है तभी आत्महिनता उत्पन्न होने के कारण यशोधरा कहती है गर्व क्यों? अत: यशोधरा शिकायत के साथ साथ स्मरण करने की इच्छा अब भी है। और फिर क्षणभर बाद आशा का अंकुर उत्पन्न होता है -

गए लौट भी वे आवेंगे
कुछ अपूर्व अनुपम लावेंगे ।

मैथिलीशरण गुप्त यह समझ पाते है कि नाना भावनाओं के परिवर्तन से ही प्रेम पुष्ठ होता है । अत: फिर शंका उत्पन्न होती है, मिलन होगा परन्तु कैसा मिलन होगा, अनुमान निकालना पडता है कि आँसुओ से प्रिय का अभिषेक किया जायेगा और यौवन समाप्त हो जाएगा मिलन के आनन्द में भी कसक रहेगी किंतु उन्होंने यह नहीं सोचा चुपचाप चले गए ।

रोते प्राण उन्हें पावेंगे
पर क्या गाते गाते ?

रससिध्दता :

गुप्तजी "रससिध्द" कवि है अत: वर्ण्य भावना को अनेक भावनाओं के व्दारा पुष्ट करने में वे प्रवीण है, गुप्तजी को केवल इतिवृत्तात्मक कवि मानते है। "यशोधरा" की इस बिखरी काव्य सहिता में अवगाहन करना चाहिए । निश्चित रूप से कवि भावचित्रण में सफल हुआ है।

सौभाग्यवती पत्नी का सिन्दूर और चुडी ही सर्वस्व हैं और यदि गोद में राहुल जैसा पुत्र हो तो सबकुछ है –

मेरी मलिन गूदडी में भी है राहुल सा लाल
बस, सिन्दूर बिन्दु से मेरा जगा रहे यह भाल ।

इसी प्रकार "आयुपुत्र दे चुके परीक्षा अब है मेरी बारी " गीत भी बहुत सफल बन पडा है ।

भाव की व्यापकता:

"मैंने ही क्या सह, सभी ने मेरी बाधा व्यथा सही" भाव को व्यापक बनाने की यह कला इस पंक्तिमें दिखायी देती है । प्रकृति के सारे

व्यापार, ऋतुएँ, आकाश, पाताल, धरती सभीने मेरी ही व्यथासे पीडित है । आँसूओ से यहाँ वर्षा आती है पति की शान्ति और कान्ति से प्रकाश मिलता है । इसमें ही भाव विस्तार हुआ है । भाव वर्णन में तीव्रता लाने में तुलनात्मक पध्दति का भी प्रयोग हुआ है। जब पात्र अपनी दशा की तुलना प्रकृति की वस्तुओंसे करता है तो पात्र की अपनी मानसिक दशा तीव्र हो उठती है। अँधेरा और सनक्षत्र आकाश विरहिणी नायिका के लिए रहस्यमय दृश्य होते है । यशोधरा सनक्षत्र आकाश से अपने सूने हृदय की तुलना करती है । प्रिय का स्मरण हो जाता है । इस प्रकार कविने इन पध्दतियोंसे यशोधरा के भावचित्रण में सफलता पायी है ।

<u>वात्सल्यचित्रण</u> :

शायद सर्वप्रथम हिन्दी काव्य में वात्सल्य के व्दारा विरह का वर्णन मिलता है । यशोधरा के काव्य सौंदर्य में वात्सल्यचित्रण अत्यंत मार्मिक हैं । कवि गुप्तजी वात्सल्य और विरह का एक साथ वर्णन करता है । राहुल को देखकर पति सिध्दार्थ का स्मरण और सिध्दार्थ के विरह में पुत्र को देखकर सब कुछ सहने का अन्तर में रखकर ही चुपचाप चलते रहना यह प्रयत्न अवश्यकही सराहनीय है। इसमें यह अनुभव होता है कि माता के विरह में पिता विरुध्द पुत्र के शब्द सुनकर माता के चित की दशा कैसी होती है? प्रेम की दशामें समर्पण एक ओर से होता है और दूसरी ओर उसका उत्तर न मिलने की जब आशंका होती है तब हृदय निराशा से भर उठता है । पहले एकतरफ समर्पण का रूप देखिए –

चाहे तुम सम्बन्ध न मानो ।
स्वामी । किन्तु न टूटेंगे ये, तुम कितना ही तानो ।
पहले हो तुम यशोधरा के पीछे होंगे किसी परा के
मिथ्या भय है जन्म जरा में, इन्हें न उनमें मानो ।

यह बिना शर्त समर्पण है। यह समर्पण तभी होता है जब वासना का अंश कम रह जाता है और यशोधरा में जननीत्व उभर आता है -

वधू सरा में अपने वर की
पर क्या पूर्ति वासना भर की
सावधान । हो निज कुलधर की
जननी मुझको जाती ।

फिर यशोधरा विरहिणी का दृष्टिकोन बदलदेने में सफल रही है पुत्र की माता बनने में अधिक गौरव का अनुभव करने लगी है यशोधरा फिर आगे इसी परिवर्तन पर जोर देती है -

" कह देना इतना ही उनसे जब उनको पहचान ले ।
धाम तुम्हारे सुत की गोपा बैठी है बस ध्यान ले ।"

भावनाओंका क्रमशः उपयुक्त पध्दतिपर विकास करने में गुप्तजी सफल रहे है । "साकेत" की उर्मिला पुनर्मिलन पर अपने गत यौवनपर पश्चाताप करती है क्योंकि उसका रूप प्रेयसी से जननी में परिणत न हो पाया था परंतु यशोधरा विगत यौवनपर पश्चाताप नहीं करती परन्तु अपने मातृत्व के स्वाभिमान की रक्षा करती है। सिध्दार्थ को मिलने नहीं जाती अंतमें पति मिलने आता है तब पुत्र के अधिकार को माँगती है । पुत्र को अधिकार दिलाकर माता का कार्य पुर्ण हो जाता है । इसमें भाव का केवल तन्मयता के साथ वर्णन ही नहीं हुआ अपितु क्रमशः विकास हुआ है । पहले के बदलती हुई चित्तवृत्ति पश्चाताप, शोक, आत्मग्लानि, दिनता और अपमानजन्य क्षोभ को भूलकर मातृत्व में ही शांत हो जाती है। विरह की दशा में कविने जो विकास दिखाया वही विकास वात्सल्यवर्णन में भी दिखाई पडता है । पुत्र राहुल बडा होता है तब उसकी क्रिया और प्रश्नोंमे बराबर अन्तर दिखाया गया है।

अल्प आयुमें ही अधिक बुध्दिमान राहुल दिखाता है। इसमें वात्सल्य का प्रयोग विरहवर्णन के लिए ही किया गया है क्योंकि कवि गुप्तजी का ध्यान यशोधरापर केन्द्रित रहता है, वह सारे वार्तालाप का विषय यशोधरा की अनुभूतियों को ही बनाता है।

मैथिलीशरण गुप्त पारिवारिक वातावरण के कुशल चितेरे हैं। यशोधरा की विशेषता यह है कि पारिवारिक वातावरण उपस्थित करना। यशोधरा काव्य में पिता-पुत्र, पति-पत्नि, माता-पुत्र तथा अन्य पारिवारिक सम्बन्धों की ओर झाँककर देखने योग्य हैं। नन्द, यशोधरा, महाप्रजावती, शुध्दोधन, गौतमी और दास-दासियाँ सभी अपने व्यवहार से वात्सल्य की वर्षा करते हैं। इन पात्रोंमें स्नेह, ममता और एक दूसरे के प्रति त्याग है, वह जीवन की कटुता को भुला देता है। "यशोधरा" काव्य में जो पारिवारिक वातावरण है वह अत्यंत आकर्षक लगता है। कवि को भाववर्णन में सफलता मिली है। पात्रों में नया व्यक्तित्व लाने के लिए कथन और उक्तियों के अविष्कार करने घटना का क्रम निश्चित करने यह कल्पनाशक्तिव्दारा ही सम्भव होता है। यहाँ पुत्र के शयन को प्रकृति की अन्य वस्तुओं को लाकर किया गया है।

घुसा तिमिर अलकों में आग
जाग, दु:खिनी के सुख जाग

यहाँ अलकों की कलिमा को, तिमिर की कलिमा को ध्यान में लाकर स्पष्ट किया गया है।

यशोधरा काव्य में प्रकृतिवर्णन मुख्य है यशोधराको उपमान के रूपमें प्रस्तुत किया गया है। और प्रकृति को उपमेय के रूपमें। स्वतंत्र रूपसे प्रकृति के वर्णन के दो चित्र यशोधरा में और भी सुन्दर है। एक तो सनक्षत्र

आकाश और दूसरा निशि का । निशि के वर्णन में तो वातावरण चित्रण दिखायां है। किंतु आकाशके वर्णन में रूपक और उत्प्रेक्षा का सुन्दर प्रयोग मिलता है ।

उलट पडा वह दिव - रत्नाकर
पानी नीचे ढलक वहा
तारक रत्नहार सखि, उसके
खुले हृदय पर झलक रहा ।

यहाँ कल्पना यह की है कि आकाश समुद्र है और समुद्र में अनेक रत्न रहते है, आकाशरूपी समुद्र के उलट जाने से पानी तो ओस के रूपमें नीचे गिर गया है । परन्तु रत्न आकाश के हृदयपर ही पडे रहे है । यह कल्पना सुन्दर है ।

गुप्तजीने प्राचीन परम्परा के अनुसार षडऋतुका वर्णन किया है । विस्तृत और गम्भीर कल्पना को रूप "यशोधरा" काव्य में मिलता है ।

कल्पना का प्रयोग अलंकार विधान में भी दिखायी देता है । वस्तुत: कविने सादृश्यमूलक अलंकार, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और मानवीकरण का अधिक प्रयोग किया है। विरोधाभास का प्रयोग विरोध-मूलक अलंकारों में और शब्दालकारों में श्लेष और वक्रोक्ति का प्रयोग मिलता है ।

गुप्तजीने साकेत की तरह कवित्व शैली का प्रमुख विशेषता उक्तिवैचित्र्य है, । "यशोधरा" काव्य में शैली के प्राचीन तत्व मिलते है । "यशोधरा" में महाभिनिष्क्रमण में जो प्रवाह है वह वेगमय शैली में दिखाया है। गुप्तजी द्विवेदी-युगीन कवि है अत: उसकी भाषा संस्कृत के तत्सम शब्दोंसे युक्त है, गुप्तजीने

लालित्य और लयक पर ध्यान नहीं दिया है। इसमें चमत्कार उत्पन्न करनेके लिए श्लेषमूलक शैली का अधिक प्रयोग किया है। यशोधरा की शब्दावली और छायावादी की शब्दावली की तुलना की जाय तो यह तत्व स्पष्ठ होता है कि कुछ कवित्वहीन शब्दों का प्रयोग यहाँ हुआ है ।